28 P
217
H

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1309/10/21

आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 217

* वन्देमातरम् *

# आज़ादी या मौत।

जयत जय श्री गांधी जय हिन्द के सरताज तुम।
जय विश्व व्यापक तपस्वी जग पूज्यवर हो आज तुम॥
जय मात-भारत भूमिकी रखियो सदा अब लाज तुम।
करें आरती कर जोरिकर पाओ अवश्य स्वराज तुम॥

प्रकाशक व संग्रहकर्ता-

**रामस्वरूप गुप्ता सहपऊ (मथुरा)**

प्रथमबार १००० | सर्वाधिकार स्वरक्षित १९३१ | मूल्य -)

5/17/1

6973 A2

मुद्रकः—
बाबू मंगीलाल गुप्ता,
एच० डी० प्रिन्टिंग वर्क्स, मथुरा।

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
GOVT. OF INDIA
No. 217
Date 3/12/71

* वन्देमातरम् *

# आज़ादी या मौत

## राष्ट्रीय उत्तमोत्तम गायन।

### ईश्वर-प्रार्थना (१)

हे! जगत्राता! विश्वविधाता! हे सुख शान्ति निकेतन हे!
प्रेम के सिन्धो! दीन के बन्धु! दुख दरिद्र बिनाशन हे!!
नित्य, अखंड, अनन्त, अनादि, पूर्ण ब्रह्म सनातन हे!
जग आश्रय, जगपति, जगबंदन, अनुपम अलख निरंजन हे!!
प्राण सखा त्रिभुवन प्रति पालक, जीवन के अवलम्बन हे!

---

### भारत माता की स्तुति नं० २

भारत जनिन तेरी जय तेरी जय हो,
जय हो बिजय हो, जय हो बिजय हो।
तू! शुद्धि अरु बुद्धि, तू! प्रेम आगार,
तेरो विजय सूर्य्य माता उदय हो॥ भारत०॥
गांधी, रहैं और तिलक, मोती आवें।
आज़ाद तैयब, जवाहर की जय हो॥भारत०॥

दत्त, भगत, रहैं यतीन्द्र, फिर से आवें।
रास बिहारी, सुभाषचंद की जय हो ॥भारत०॥
हों भीष्म समधीर, अर्जुन महावीर।
राणा, शिवाजी का फिर,से उदयहो ॥भारत०॥
हमारे लिये जेल हो स्वर्ग का द्वार।
बेड़ीनकी झुंनझुंन में बीणांकी लयहो ॥भारत०॥
आवें पुनः कृष्ण, देखैं छटा तेरी।
सरिता, सरों, में बहता प्रणय हो ॥भारत०॥
कहता ख़लीला, ये भारत निवासी।
सभी मिलके गाओ जननि तेरी जयहो॥भारत०॥

---

## प्रभातफेरी आसावरी नं० ३

( ला० मुंशीलाल वैश्य द्वारा )

नींद गफ़लत की ने हिंद घेरा, जागो २ हुआ सबेरा।
चढ़ी बेहोशी ऐसी खुमारी, सबने एकदम शुधि बिध बिसारी,
घर लुटेरोंने की लूट जारी, लूटी भारतकी हाय! बसुधासारी,
दीया सब तौर दुख अब घनेरा, जागो जागो० ॥ १ ॥
भाई क्या? दिलमें ऐसी बिचारी, जो गुलमी लगे तुमको प्यारी,
ग़ैर यूरुप हंसे देवे तारी, निकला भारत डरपोक भारी,
जाने कहां ध्यान एक दम गेरा, जागो जागो० ॥ २ ॥
अब तो सुस्ती को भाई हटाओ, धर्म के जंगमें कूद आओ,
लाल भारत के सब ही कहाओ, इसकी हुरमत बचाओ बचाओ,
कोई दिनका यहाँ पर बसेरा, जागो जागो० ॥ ३ ॥
हम विनय सबसे यही उचारत मातृ-भूमी चलो काज सारत,

देशहित, चाहे होजाओ ग़ारत होगा आज़ाद हमारा ये ! भारत।
हम निस दिन धरें प्रभू ध्यान तेरा, जागो जागो० ॥४॥

## तपोभूमि की उपमा नं० ४

दोहा—हे हरि ! जन्म स्थान की, कछुक अलौकिक बात।
तसला तख़्ती टिकट से, काम पड़े दिन रात ॥
कवित्त—देश हित काज हम भारत निवासियों ने,
सुख के सदनन आज जेलखाने माने हैं।
कारो कोट नेकर कमीज़ तन आधे लसै,
लाल २ टोपी लखि मुकट लुभाने हैं ॥
मेवा सों महान भुनें चनों का कलेवा मिले,
रूखी दाल रोटी सो व्यंजन लजाने हैं।
मात मख़मलैय करें मूंज के बिछौना,
नई सौरिहू के नाने बने कम्मल पुराने हैं ॥

## गाली नं ५

टेक—गाँधी ने बनाय दियो खेल जेल भारत भाई।
भरती होकर कांग्रेस में झंडा लियो उठाय ॥
गांव २ और शहर २ में दीनी सभा कराय।
गवर्नमेंट दहलाई ॥ गांधी० ॥
ज़िले २ के सब थानों में दई ख़बर पहुंचाय।
क़ायम अमन सभा कर रोको आन्दोलन को जाय ॥
पुलिस भी समझाई ॥ गांधी० ॥

झूंठी सांची लिख रिपोर्ट वारंट रहे कटषाय।
अपने भईयान को पुलिसिया खुदही रहे फंसाय॥
शर्म दिल नहिं आई ॥गांधी०॥

साहिब कलक्टर के ले दस्तखत पुलिस रही हरषाय।
गिरफ़तार कर सत्याग्रही को मोटर लई मंगवाय॥
हवा अच्छी खाई ॥गाँधी०॥

देश हितैषी जंट मजिष्ट्रेट करें फैसला हाल।
झूंठो सांचो दफ़ै लगाकर भेजें दो २ साल॥
कृष्ण मंदिर भाई ॥गाँधी०॥

कम्मल फट्टा मिलै बिछौना और मिट्टी की खाट।
मिलें:वस्त्र बहु तसला बेली, बन गयो पूरो ठाठ॥
खुशी तन में छाई ॥गांधी०॥

दोनों वक्त समय पर मित्रो! खाना होत त्यार।
घंटी लगा भोग ठाकुर का झालर की झनकार॥
निरख शोभा पाई ॥गांधी०॥

कुंवर कलेऊ में मिलै चबैना दुपहर रोटी दार।
मिलै शाम को भुजिया चटनी साग मसालेदार॥
बैठ ब्यारू पाई ॥गांधी०॥

बान मश़क़त बटने लागे तीन सौ गज़ की तीस।
जो कोई चक्की में दे दयो धरो तीन पाव पीस॥
भेज दये तनहाई ॥गांधी०॥

बंदर घुड़की तनहाई की भजन करें एकान्त।
खड़ी हथकड़ी बैंत लगाकर दुष्ट हो गया शांत॥
रहा दिल शरमाई ॥गांधी०॥

जमके दूत गश्त को आवें जब ही प्रार्थना होय।
गिनती भूल पड़े जबही सूं जमादार रहे रोय॥
बड़ी मुश्किल आई॥गांधी०॥
बारक २ जेलर डोलै कैसी अटकी आज।
ईश्वर इन सूं फंद छुड़इयो करियो बेग स्वराज॥
नाक में दम आई॥गाँधी०॥
जेल नहीं है तपोभूमि है करलो मित्र बिचार।
रामसिंह कथ कहैं जेल में होगा बेड़ा पार॥
चहुं दिश ध्वनि छाई॥गांधी०॥

---

## कैम्पजेल के अत्याचार नं० ६

( तर्ज़—मेरे राम बुलाले अयोध्या मुझे )

सोते बच्चों पर डंडे चलाये गये।
अपनी बैरिक में मार गिराये गये॥
घुस गये वार्डर प्रथम डंडे चलाने के लिये।
पीछे सिपाही थे खड़े गोली चलाने के लिये॥
जेल द्वारों में गोरे अड़ाये गये। सोते०॥
पड़ने लगी जब मार अन्धा धुन्ध चारों ओर से।
बोलदी बच्चों ने भारत वर्ष की जय ज़ोर से॥
बन्दे मातरम् के नारे लगाये गये। सोते०॥
चमकी प्रलयकी बिजलियां घनघोर अत्याचारसे।
बेहोश बच्चे हो गये उन ज़ालिमों की मार से॥
सर से खूं के पनारे बहाये गये। सोते०॥

मार कर बच्चों को ज़ालिम फिर तनहाई में घुसे ।
विश्वनाथ राजारामका सिरफ़ोड़कर मनमें हंसे ॥
हम सबको भी डंडे दिखाये गये । सोते० ॥
दर्द से तड़फ़ा किये बेहोश बच्चे रात भर ।
सोते रहे जेल-डाक्टर आराम से रात भर ॥
ठंडी रात में घाव सुखाये गये । सोते० ॥
आया कलक्टर जांच करने उसको भी बहका दिया ।
टूटी जाली टीन दिखला अपना दिल ठंडा किया ॥
उन पर झूंठे केस चलाये गये ।
सोते बच्चों पर डंडे चलाये गये ॥ ( प्रताप से )

---

## चेतावनी नं० ७

जवानो उठो हिन्द सन्तान ।
चाहती है माता बलिदान ॥
हँसते हुये फूल से आकर, शीश झुकादो माँ के पग पर ।
कटता हो कटजाने दो सर, तनिक न होना म्लान ॥जवानो०॥
सोने वालो उठो कड़क कर, जागे हुये बढ़ो वेदी पर ।
बूढ़ा हो नारी हो या नर, सबको है आह्वान ॥जवानो०॥
उठो मजूरो दीन भिखारी, उठो २ निव्रत व्यौपारी ।
ओ ? छात्रो ! भावीअधिकारी, दुखी दरिद्र किसान ॥जवानो०॥
हो चमार भंगी या पासी-विप्र पुजारी या सन्यासी ।
धनी दरिद्री या उपवासी-सबका भाग समान ॥जवानो०॥
हो गुलाम कैसा ही दाग़ी-वर्तमान शासन अनुरागी ।
नरम गरम वैरागी त्यागी-उठो सभी मति मान ॥जवानो०॥

फांसी चढ़ो जल में जावो-भय बस कभी न देश भुलावो।
हथकड़ियों पर मिलकर गाओ-स्वतंत्रता का गान ॥ज़वानो०॥
उठी मगन झनकार सुखारी-गांधी वींणा की अति प्यारी।
"माधव" मस्त उठो दिखलादो, कालों में है जान ॥जवानो०॥

---

## भारत का चित्र नं० ८

जिसको हो ग़म की ख़्वाहिश, भारत से मोल लेलो।
हरशैक़ी याँ नुमायश, भारत से मोल लेलो॥
भूखों की क्या? कमी है, नंगो से पुर ज़मी है।
लाखों बिना ही वारिश, भारत से मोल लेलो॥
ठग चोर ज़ार रहज़न, डाकू उस्र के हरफ़न।
बेईमानी चहिये ख़ालिश, भारत से मोल लेलो॥
दिल के बड़े असैले, पेट के भारी मैले।
ऊपर सफ़ेद पालिश, भारत से मोल लेलो॥

---

## मेरा झंडा नं० ६

यह राष्ट्र ध्वजाधन मेरा जीवन बलिदान करेंगे।
झंडा है प्राण हमारा-प्राणों से अधिक प्यारा-तन मन धन इस पर वारा।
सब कुछ कुरबान करेंगे। यह राष्ट्रध्वजा० ॥

शूली पर उछल चढ़ेंगे, बंधन से नाहिं डरेंगे-सब कुछ सानन्द सहेंगे।

पर झंडा नहीं तजेंगे। यह राष्ट्रध्वजा० ॥

आओ झंडा फहरादें-शुचि राष्ट्रभाव दरशादें-सत्याग्रह समर दिखादें।

पर हिन्सा नहीं करेंगे। यह राष्ट्रध्वजा० ॥

---

## ग़ज़ल नं० १०

( तर्ज़---जिसने दिया है दर्द दिल उसका खुदा भला करे )

देखें गुलाम क़ौम में मुल्क के काम आये कौन।
माता पड़ी है क़ैद में आकर इसे छुड़ाये कौन ॥

बोस सा ग़म गुसार क़ौम, है कहां फ़ौजदार क़ौम।
शाह सा रुह सवार क़ौम, रंजो अलम उठाये कौन ॥देखें०॥

अश्फ़ाक़ अली सा वह बबर, और उसके हम सफ़र।
जानें सभी गये किधर, ढूंढ़के उनको लाये कौन ॥देखें०॥

लाहिड़ी मन चला नहीं, रोशने दिल जला नहीं।
बिस्मले बावला नहीं, बाज़ी ये जां लड़ाये कौन ॥देखें०॥

कौन वह बद हवास है, बात का जिसको पास है।
कौन यतीन्द्रदास है, आन पे जां गवांये कौन ॥देखें०॥

दत्तसा सर वशर है कौन, भगतसा शेरे नर है कौन।
राजगुरुसा निडर है कौन, शौक़ से सर कटाये कौन॥देखें०॥

दिल में वतन का दर्द है, लब पर जो आहे सर्द है।
कोई "हितैषी" मर्द है, फांसी पै चढ़ न जाये कौन॥देखें०॥

## थियेटर नं० ११

ज़ालिम सरकार चक्र तूने खूब चलाया॥
भारत को दीन बनाया, बेजा कर ख़ूब बढ़ाया।
नकली सामान चलाया, सब को नामर्द बनाया॥
घी शक्कर आटा खाने पर हा! सबको मज़बूर कराया।
ज़ालिम सरकार०॥

जिसकी साया में बैठ कर ऐशो आराम आया।
उसकी ही जड़ में तूने गंधक का तेज़ाब लगाया॥
सारा व्यवसाय मिटाया कलका बल तेज़ चलाया।
क़ानूनी जाल बिछाया चिड़ियों को खूब फंसाया॥
भोलो भाली जनता को मिल करके खूब लड़ाया।
ज़ालिम सरकार० ॥

## दादरा नं० १२

मेरी खद्दर से लागी प्रीत, मलमल भाती रहीं। टेक।
मलमल की उजली शान में धन धाम लुट गया॥
कंगाल हुआ देश का विश्वास उठ गया।
खल दुष्ट करें अनरीति ॥ मलमल भाती०॥
कपड़ा विदेशी आज ही जलवादो आग में।

चर्खा चलाओ देवियो ! खद्दर के राग में ।
जब होगी जगत में जीत ॥ मलमल भाती० ॥
मलमल से मुझे है घृणा खद्दर मंगाइये ।
पैसा बचेगा देश का पूंजी बढ़ाइये ॥
सब बनों देश के मीत ॥ मलमल भाती० ॥

## ग़ज़ल नं० १३

जागो ऐ नौजवानो ! पीली निकल रही है ।
भारत के वासियों की क़िस्मत बदल रही है ॥
सोये थे जिस समय पर था और वो ज़माना ।
अब देखिये हवा को किस धुनि में चल रही है ॥
भारत जननि का अबके है इम्तहाँ अख़ीरी ।
पुत्रों की बलि के कारण मैया मचल रही है ॥
अबके हुये सफल गर बस मारली लड़ाई ।
ज़ालिम दरख़्त की जड़पुर ज़ोर हिल रही है ॥
बीरों का ख़ून गिर २ बन सौवरण रहा है ।
आज़ादी की अंगूठी सांचे में ढल रही है ॥
सब देश जग चुके हैं बालक युवा जरठ भी ।
तुमको अभी खुमारी छा दर असल रही है ॥
अब छोड़ दो गुलामी मैदाने जंग कूदो ।
चहुं और आज़ादी अग्नी पजल रही है ॥

# पूर्ण स्वतंत्रता

## ग़ज़ल नं० १४

सोते भारत को जगा दिया, इन पूर्ण स्वतंत्रता वालों ने।
सबको उत्साह बढ़ा दिया, इन पूर्ण स्वतंत्रता वालों ने॥
शुभ अशुभ महक बदबू जितनी थी छुपी हुई कलियां अंदर।
सारे गुलशनको खिला दिया, इन पूर्ण स्वतंत्रता वालोंने॥
जितना महत्व प्रभुता सद्‌गुण था पोशीदा इस खद्दर में।
सबको हल करके दिखा दिया इन पूर्ण स्वतंत्रता वालोंने॥
देश पर देश के गौरव पर सर्वस्व निछावर कर देना।
जेलों का जाना सिखा दिया इन पूर्ण स्वतंत्रता वालों ने॥
बंदूक तोप तलवार आदि धर्म को डिगा नहीं सकते हैं।
सिर देकर खून बहा दिया इन पूर्ण स्वतंत्रता वालों ने॥
रूठे थे भाई से भाई थे चन्द बखेड़े आपस के।
घरका भी कलह मिटा दिया इन पूर्ण स्वतंत्रता वालों ने॥
मिल सके जिस क़दर आज़ादी 'रेवती' होय हितकर सबको।
वो पूरा पाठ पढ़ा दिया इन पूर्ण स्वतंत्रता वालों ने॥

---

# कैसो समझौता है।

## कवित्त नं० १५

चारिहूं दिशान सों यों आवित सुनाई जब।
पुलिस दमन खूब अंधा धुंध होता है॥
सौनुमें से एक दोय जैसे तैसे छोड़े जांय।
राज बंदियों का तो खटाई में खटौता है॥
सूझते ही लोगुन कों, आंधरो बनायौ चाहै।
दिन ही में धूरि डारें अजब ठगोता है॥
समझि परत नाहिं राम की दुहाई "प्रिय"।
मन मांहि मैल भरो कैसो समझोता है॥

समाप्त

मिलने का पता-

१—श्रीमालती बुकडिपो सहपऊ ( मथुरा )

२—रामस्वरूप द्वादश श्रेणी सौदागरान सहपऊ ( मथुरा )

३—श्री नेहरू पुस्तकालय सहपऊ ( मथुरा )

---

नोट-पाठकों की सेवा में यह निवेदन है कि और भी उत्तमोत्तम कविताओं की बहुत सी पुस्तकें छप रही हैं थोड़े अरसे की प्रतीक्षा करें, स्थायी ग्राहक बनें।

निवेदक-

रामस्वरूप गुप्ता।